Date ___/___/________

Date:- 28/4/2020
Content Writer:-
Dr. Akshay Kumar Pathak
Deptt. of Economics,
Marwari college,
Darbhanga (LNMU)

Degree Part-I (Hons.)
Paper - I
Content of the Paper:
Micro Economics
Module - 3

TOPIC :- ANALYSIS OF ISO-COST LINE
(सम-लागत रेखा का विश्लेषण)

Scanned with CamScanner

उत्पादन निर्णय के समस्या के समाधान के लिए अथवा उत्पादक अपने साम्य का विश्लेषण करने के लिए दो प्रमुख उपकरणों समोत्पाद वक्र एवं सम-लागत रेखा का प्रचलन करते हैं। समोत्पाद वक्र मांग सिद्धांत के तटस्थता वक्र के समान होता है। दूसरी तरफ सम-लागत रेखा दो तत्वों अर्थात उत्पादन साधनों की कीमतें तथा कुल मुद्रा जिसको उत्पादक साधन खरीदने पर व्यय करना चाहता है, को प्रकट करता है। अर्थात सम-लागत रेखा पर यदि हम किसी भी बिन्दु को लेते हैं तो वह श्रम एवं पूंजी के उस संयोग को दिखाएगा जो कि दी हुयी मुद्रा राशि तथा श्रम व पूंजी की दी हुयी कीमतों पर प्राप्त किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, लागत रेखा एक उत्पादक की दी हुयी मुद्रा राशि के दो साधनों पर व्यय करने की संभावनाओं को व्यक्त करती है। सम-लागत रेखा को साधन कीमत रेखा अथवा व्यय रेखा के नाम से भी जाना जाता है। सम-लागत रेखा की निम्नांकित मानचित्र के माध्यम से अधिक स्पष्ट विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सकता है:-

मानचित्र - 1

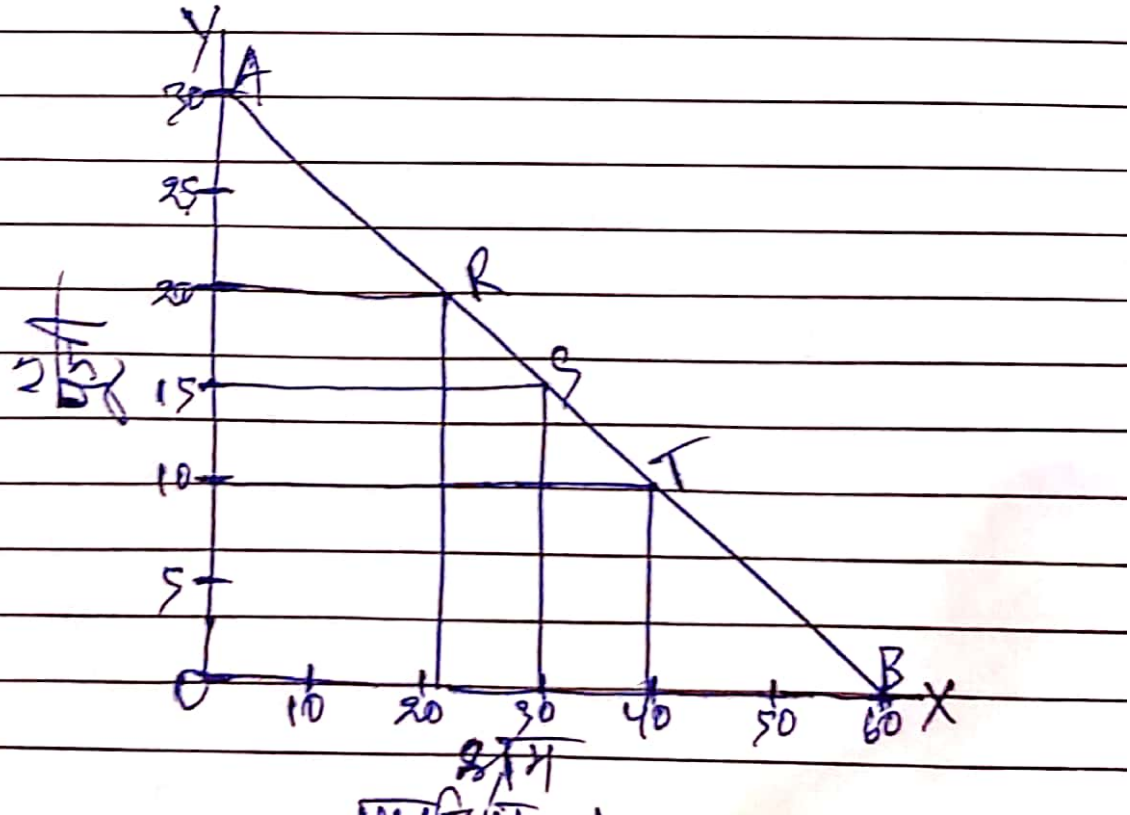

Scanned with CamScanner

मानचित्र-1 में AB रेखा सम-लागत रेखा है जो 60 रु० के लागत द्वारा खरीदी जानेवाली श्रम और मशीन या पूंजी के विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करती है। उदाहरण के लिए, इस रेखा पर R बिन्दु यह बताता है कि दी हुयी बाजार की दर पर उत्पादक 20 मशीन एवं 20 श्रमिक खरीद सकता है अथवा S बिन्दु के अनुसार वह 15 मशीन एवं 30 श्रमिक अथवा T बिन्दु के अनुसार 10 मशीन एवं 40 श्रमिक खरीद सकता है। अतः इस रेखा पर यदि हम कोई भी बिन्दु लें तो वह श्रम एवं पूंजी के उस संयोग को दिखलायेगा जो कि दी हुयी मुद्रा-राशि तथा श्रम एवं पूंजी की दी हुयी कीमतों पर प्राप्त किया जा सकता है। सम-लागत रेखा AB का ढाल दोनों साधनों के कीमत अनुपात को व्यक्त करता है अर्थात् यहाँ पर इस रेखा का ढाल श्रमिकों एवं पूंजी के बीच मूल्यों का ऐसा अनुपात सूचित करता है जिसके मशीनों की 30 इकाईयाँ श्रमिकों के 60 इकाईयों के बराबर होगी।

अतः स्पष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सम-लागत रेखा साधनों की अधिकतम मात्रा के विभिन्न संयोगों को बताती है जो कि फर्म, साधनों की एक दी हुयी कीमत पर तथा एक दी हुयी लागत या व्यय द्वारा खरीद सकती है।

एक सम-लागत रेखा का ढाल ऋणात्मक होता है। इसका कारण स्पष्ट है कि यदि फर्म एक साधन को अधिक खरीदना चाहती है, बिना अधिक मुद्रा व्यय किए हुए तो उसे दूसरे साधनों की कम मात्रा खरीदनी पड़ेगी।

सम-लागत रेखा में परिवर्तन के कारण :-

सम-लागत रेखा में परिवर्तन के निम्नांकित कारण हैं :-

(1) उत्पादक द्वारा किए जाने वाले कुल व्यय में परिवर्तन के कारण सम-लागत रेखा में परिवर्तन होता है। नीचे दिए गए मानचित्र-2 के द्वारा सम-लागत रेखा का विश्लेषण उत्पादक द्वारा कुल व्यय में किए गए परिवर्तन के कारण हुआ है।

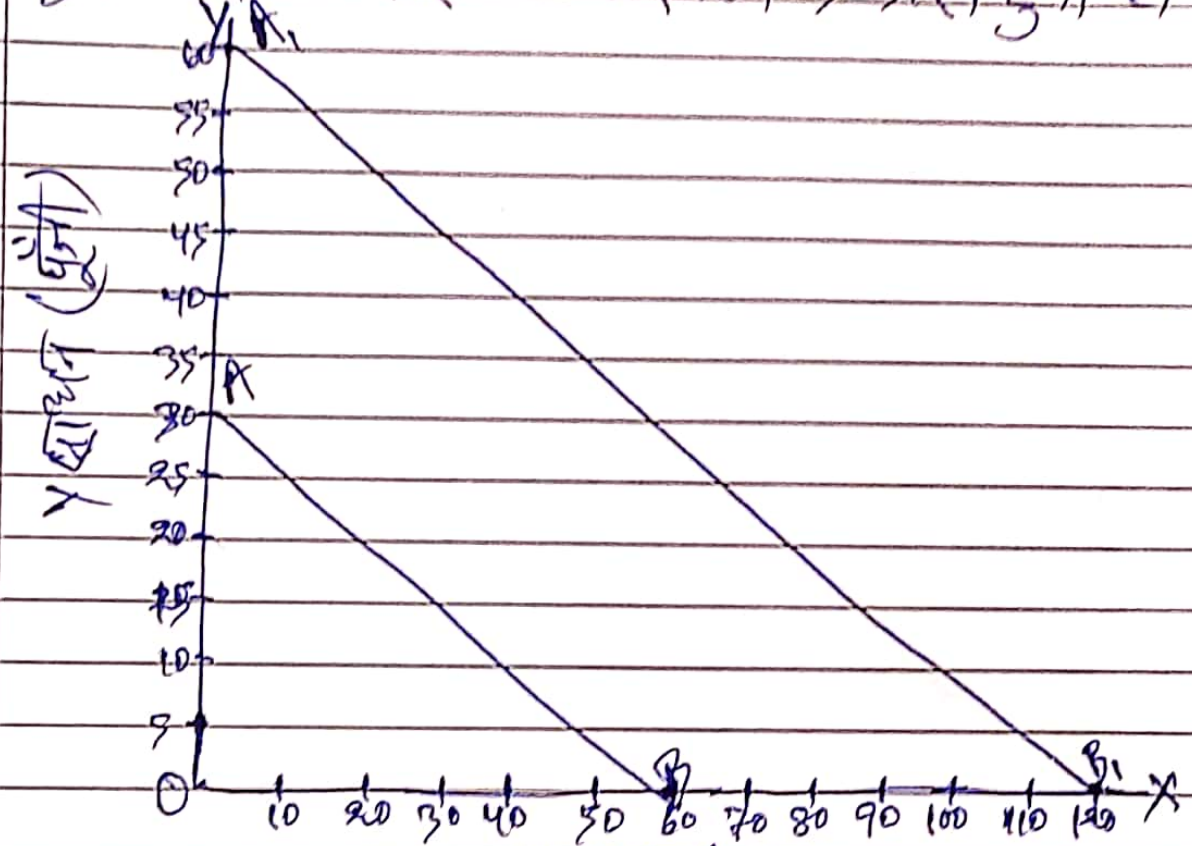

मानचित्र-2

यदि साधनों की कीमत स्थिर रहने पर उत्पादक 60 रु० के स्थान पर 120 रु० व्यय करने का निर्णय लेता है तो वह दोनों साधनों को पहले से अधिक मात्रा में खरीद सकेगा। कुल व्यय के 120 रु० तक बढ़ जाने से सम-लागत रेखा ऊपर की ओर सरक जाएगी। यदि सम्पूर्ण 120 रु० श्रम पर व्यय किया जाए तो उसकी कीमत 1 रु० प्रति इकाई होने पर कुल 120 इकाइयाँ अर्थात OB, खरीदी जा सकेंगी। दूसरी तरफ साधन Y अर्थात पूंजी की 60 इकाइयों के खरीद द्वारा OA, खरीदी जा सकेगी। इस तरह हम

Maharaza

Scanned with CamScanner

देखते हैं कि सम-लागत रेखा AB से परिवर्तित होकर AB, हो जाता है साकुल्यात्म में परिवर्तन के कारण हुआ है।

(ii) साधन कीमत में परिवर्तन के कारण सम-लागत रेखा में परिवर्तन होता है।—

किसी भी एक साधन के कीमत में परिवर्तन होने से सम-लागत रेखा की स्थिति बदल जाती है तथा दूसरी सम-लागत रेखा पहली सम-लागत रेखा के बराबर नहीं होती है। इसको नीचे दिए गए मानचित्र-3 से स्पष्ट किया जा सकता है।

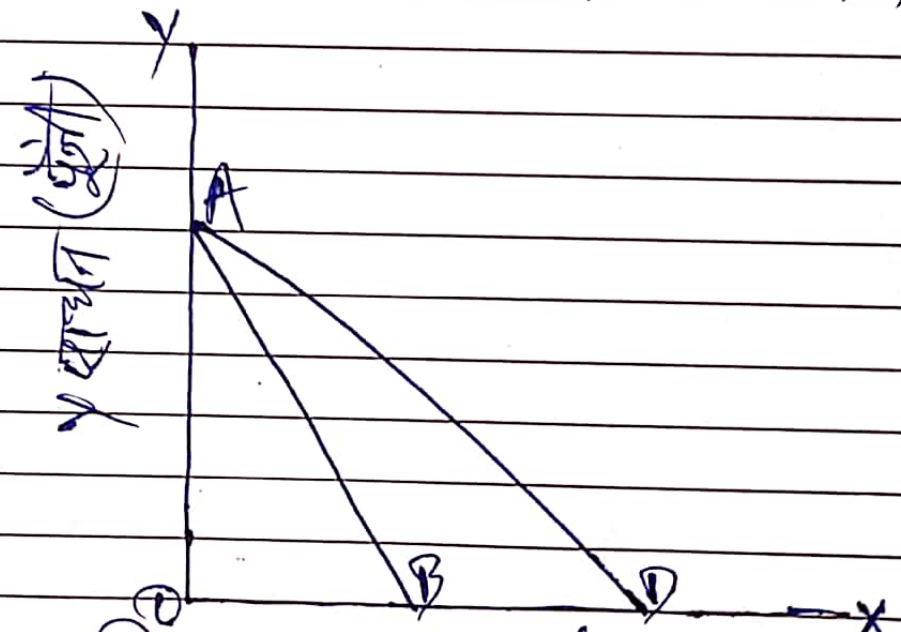

मानचित्र-3

चूँकि Y साधन के कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता अतः उसकी OA मात्रा खरीदी जाएगी। जबकि X साधन में परिवर्तन होने के कारण उसके OB मात्रा के स्थान पर OD मात्रा की खरीददारी जा सकेगी। अर्थात X साधन के कीमत में परिवर्तन के कारण सम-लागत रेखा AB से परिवर्तित होकर AD हो जाता है।

Scanned with CamScanner